MADHYA PRADESH BHOJ (OPEN) UNIVERSITY

Vol. 2026-1 January - March 2026 https://mpbou.edu.in

e-Newsletter

Madhya Pradesh Bhoj (Open) University, Bhopal
Raja Bhoj Marg, Kolar Road, Bhopal (M.P.)

MP Startup Summit 2026
दिनांक - 11 जनवरी 2026

MP Startup Summit 2026 के अंतर्गत रविन्द्र भवन भोपाल में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम दिवस "Incubator Masterclass: Achieving Incubator Sustainability" कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमे मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय से डॉ. शुचि मिश्रा, प्रभारी इन्क्यूबेशन, श्रीमती निधि रावल गौतम, वरिष्ठ सलाहकार, डॉ. भारती शर्मा, वरिष्ठ सलाहकार, डॉ. शिवांगी दुबे, अतिथि शिक्षक, डॉ. जगदीश मसोदकर, एवं श्री गोविन्दा डेहरिया, अतिथि शिक्षक ने भाग लिया।
श्री वैकुंठ प्रसाद, AVP NSRCEL, IIM B, श्री प्रसाद मेनन, प्रेसिडेंट, ISBA एवं प्रो. प्रशांत सलवान, स्ट्रेटेजी और इंटरनेशनल बिजनेस, IIM इंदौर वर्कशॉप के स्पीकर थे।

स्वामी विवेकानंद जयंती
दिनांक - 12 जनवरी 2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्विद्यालय में स्वामी विवेकानंद जी के 163 वें जन्म दिवस के अवसर पर विश्वविद्यालय में नव प्रवेषित विधार्थियों के लिए "रन फॉर स्वदेशी" विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति एवं विधार्थी सहायता विभाग के निदेशक प्रो. (डॉ.) रतन सूर्यवंशी ने की, साथ ही इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. सुशील मंडेरिया, मुद्रण वितरण विभाग एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वसंन केंद्र की निदेशक प्रो. (डॉ.) विभा मिश्रा एवं भोपाल क्षेत्रीय केंद्र निदेशक डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर उपस्थित रहे।

यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के उच्च शिक्षा विभाग से प्राप्त आदेश के तारतम्य में आयोजित किया गया। रन फॉर स्वदेशी केवल एक दौड़ नहीं बल्कि आत्मनिर्भर भारत और पूर्ण रोजगार युक्त भारत निर्माण का जन आंदोलन है इसका उद्देश्य युवाओं को स्वदेशी मूल्य उद्यमिता कौशल विकास शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य अनुशासन तथा राष्ट्र निर्माण के प्रति सक्रिय भागीदारी हेतु प्रेरित करना है।

विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने अपने उदबोधन में कहा कि, स्वामी विवेकानंद सदैव से ही स्वदेशी प्रेमी रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य भले ही समय पूर्व पूर्ण कर लिया हो और छोटी सी आयु मे देह त्याग दिया हो परंतु वे आज भी हमारे बीच हमारे विचारों मे जीवित हैं। उनका स्वदेशी प्रेम सिर्फ भारत तक ही नहीं वरन् विदेश के इतिहास में भी स्थापित है। उनके इसी भारतीय स्वदेशीय प्रेम को हमे भी निरंतर जीवित रखना होगा और स्वदेशी पहनावे के साथ साथ स्वदेशी विचारों को भी अपनाना होगा। उन्होंने सभागार में उपस्थित नव प्रवेषित विधार्थियों से भी आवाहन किया कि शिक्षा हो या देश हित स्वदेशी अपनाओ और देश बचाओ।

दीक्षारंभ कार्यक्रम — नव प्रवेशित विधार्थियों के लिए स्वदेशी विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित

हर युवा में स्वदेशी के प्रति अपनत्व जरूरी है : डॉ. मंडेरिया

विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति एवं विधार्थी सहायता विभाग के निदेशक प्रो. (डॉ.) रतन सूर्यवंशी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि, इरादे मजबूत हों और हौंसले बुलंद हो तो हमारा देश जल्द ही इंडिया से 'हमारा भारत' कहलाएगा।

स्वामी विवेकानंद जी बहुत ही साधारण स्वभाव एवं मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। इसी वजह से उन्हे स्वदेश प्रेम और स्वदेशी वस्तुओं से लगाव सदैव रहा है। उन्होंने देश विदेश ही नहीं पूरे विश्व पटल पर स्वदेशी को बढ़ावा दिया है। उन्होंने कहा कि, मैं यहाँ उपस्थित सभी नव प्रवेषित विधार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि स्वदेशी को सिर्फ काग़ज़ों या बातों तक नहीं हमें विवेकानंद जी की तरह अपने विचार और व्यक्तित्व में भी उतारना है। फिर हम गर्व से कह सकेंगे हम इंडियन नहीं हम भारतीय हैं।

भोपाल क्षेत्रीय केंद्र निदेशक एवं विश्वविद्यालय के अकादमिक समन्वय विभाग के निदेशक डॉ. हर्षवर्धन तोमर ने भी स्वामी विवेकानंद जी के जीवन और स्वदेशी प्रेम पर प्रकाश डालते हुए सभागार मे उपस्थित सभी को विवेकानंद के जीवन से जुड़े अनछुए पहलुओं से परिचित कराया और आग्रह किया कि जिस प्रकार विवेकानंद जी ने अपने जीवन में सिर की पगड़ी से लेकर पैर के खडाऊं तक स्वदेशी को महत्व दिया, अपनाया और पूरे विश्व में स्वदेशी का परचम लहराया है ठीक वैसे ही हर भारतीय को अपनाना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन विद्यार्थी सहायता के उप निदेशक डॉ. शैलेंद्र कौशिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुलपति, कुलसचिव, अधिकारीगण, नव प्रवेषित विधार्थियों सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने "Run for Swadeshi"के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर आयोजित पैदल रैली में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यक्रम का संचालन विद्यार्थी सहायता के उप निदेशक डॉ. शैलेंद्र कौशिक द्वारा किया गया। इस अवसर पर कुलपति, कुलसचिव, अधिकारीगण, नव प्रवेषित विधार्थियों सहित समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने "रन फॉर स्वदेशी"के अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर आयोजित पैदल रैली में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और कार्यक्रम में अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

एजुकेशन अपडेट

हर युवा में स्वामी विवेकानंद की तरह स्वदेशी प्रेम जरूरी: डॉ मंडेरिया

भोपाल@पत्रिका. मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानंद की जयंती पर नव प्रवेशित स्टूडेंट्स के लिए दीक्षारंभ कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर नव प्रवेषित विधार्थियों के लिए 'रन फॉर स्वदेशी ' विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलपति और विधार्थी सहायता विभाग के निदेशक डॉ. रतन सूर्यवंशी ने की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव एवं कार्यक्रम संयोजक डॉ. सुशील मंडेरिया, मुद्रण वितरण विभाग एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की निदेशक डॉ. विभा मिश्रा और भोपाल क्षेत्रीय केंद्र निदेशक डॉ. हर्षवर्धन तोमर उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने अपने कहा कि स्वामी विवेकानंद सदैव से ही स्वदेशी प्रेमी रहे हैं। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद आज भी हमारे बीच हमारे विचारों में जीवित हैं। विवि के प्रभारी कुलपति एवं विधार्थी सहायता विभाग के निदेशक डॉ. रतन सूर्यवंशी ने कहा कि स्वदेशी सिर्फ कागजों या बातों तक नहीं रहना चाहिए, हमें विवेकानंद की तरह इसे अपने व्यक्तित्व में भी उतारना है।

नेशनल स्टार्टअप डे
दिनांक - 16 जनवरी 2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में आज नेशनल स्टार्टअप डे के अवसर पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला इंस्टिट्यूशन इन्नोवेशन काउंसिल(IIC) के अंतर्गत workshop on AI industry 4.0 tool for innovators and entrepreneurs पर आयोजित की गई।

इस कार्यशाला में विश्वविद्यालय में विशेष अतिथि के रूप में इंडियन इंस्टीट्यूट आफ साइंस एजुकेशन एंड रिसर्च (IISER) के डिपार्टमेंट ऑफ डेटा साइंस के प्रोफेसर डॉ आकाश अनिल शामिल हुए।

कार्यशाला का शुभारंभ दीप प्रज्जवलनऔर सरस्वती मां की पूजा के साथ हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के प्रभारी कुलगुरु एवं विद्यार्थी सहायता विभाग के निदेशक प्रो. (डॉ.) रतन सूर्यवंशी और विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ सुशील मंडेरिया जी द्वारा विशेष अतिथि प्रोफेसर डॉ आकाश अनिल का तुलसी पौधा और शॉल ओर देकर स्वागत किया गया।

डॉ आकाश ने कार्यशाला में आज के दौर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के उपयोग और उसके वर्तमान के रोजगार रुझानों के बारे में विस्तार से बताया।

कार्यशाला में विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सहायता विभाग के निर्देशक प्रो. (डॉ.) रतन सूर्यवंशी जी ने सभी छात्रों और विश्वविद्यालय के अन्य सदस्यों को आज के दौर में पुरानी पद्धति से एजुकेशन और सरकारी नौकरी के दौड़ से बाहर निकाल कर एंटरप्रेन्योर और स्टार्टअप से अपने कैरियर में आगे बढ़ाने की सलाह दी।

कार्यक्रम में उपस्थित विश्वविद्यालय कुलसचिव डॉक्टर सुशील मंडेरिया जी ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) मनुष्य ने ही बनाया है और AI मनुष्य से इंटेलिजेंट नहीं हो सकता । आज के दौर में AI हमे अपनी भावनाएं ओर संवेदनाएं भी बता रहा है।

इस इस अवसर पर कार्यशाला संयोजक विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेल की इंचार्ज एवं निदेशक डॉ शुचि मिश्रा, आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र एवं मुद्रा वितरण विभाग की निर्देशक डॉ विभा मिश्रा, विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की वरिष्ठ सलाहकार डॉ भारती शर्मा, डॉ संजय गुलाटी, डॉ मधुकर ईटेवार, डॉ प्रज्ञा ओझा एवं अन्य सदस्य और छात्र उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन विश्वविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन केंद्र की वरिष्ठ सलाहकार सुश्री निधि रावल गौतम द्वारा किया गया।

कार्यशाला | स्टार्टअप डे पर भोज मुक्त विश्वविद्यालय में एआई और इनोवेशन पर हुई चर्चा

एआई तकनीक नहीं, भविष्य का रोजगार का माध्यम

दिव्यांगजनों के परीक्षण हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम
दिनांक - 16 जनवरी 2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल एवं समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र (सी.आर.सी.) भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में 16 जनवरी 2026 को जवाहरलाल नेहरू स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शुजालपुर में प्रथम चरण का एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि माननीय मंत्री जी श्री इंदर सिंह परमार (उच्च शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश), अतिथि डॉ. आर. शर्मा (प्राचार्य, जवाहरलाल नेहरू स्मृति शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शुजालपुर), अध्यक्षता की भूमिका में डॉ. हेमंत सिंह केशवाल (विभागाध्यक्ष, विशेष शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल) एवं संचालन का कार्य श्री सुरेंद्र कुमार गौतम जी के द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में लगभग 120 से अधिक कार्यकर्ताओं जैसे- शिक्षक, विशेष शिक्षक, आशा, आंगनबाड़ी, पंचायत कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य दिव्यांगता के बारे में जानकारी देना, उनका पहचान व परीक्षण करना एवं उनकी दिव्यांगता की प्रकृति के अनुसार उपकरणों का वितरण करना आदि।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय मंत्री जी श्री इंदर सिंह परमार, उच्च शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। तदोपरान्त मां सरस्वती एवं आधुनिक युग निर्माता स्वामी विवेकानंद जी के छाया प्रति पर माल्यार्पण किया गया। इसके बाद डॉ. हेमंत सिंह केशवाल के द्वारा माननीय मंत्री जी का स्वागत पुष्प गुच्छ देकर व सम्मान अंग वस्त्र एवं तुलसी का पौधा देकर किया गया। डॉ हेमंत सिंह केशवाल द्वारा तीन चरण के कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गयी। आप के द्वारा प्रथम चरण में दिव्यांगजनों के दिव्यांगता की प्रकृति, पहचान व लक्षण के बारे में बताया गया।

द्वितीय चरण में आपके द्वारा बताया गया कि शिक्षकों, आंगनबाड़ी एवं अन्य सामाजिक कार्य कार्यकर्ताओं के सहयोग से दिव्यांगजनों के दिव्यांगता परीक्षण व आंकलन किया जायेगा तथा उनका UDID कार्ड भी बनाया जाएगा। ।

तृतीय चरण में बताया गया कि परीक्षण व आंकलन के बाद दिव्यांगजनों को उनके दिव्यांगता के प्रकृति के अनुसार उपकरणों का वितरण कार्यक्रम किया जाएगा।

माननीय इंदर सिंह परमार, उच्च शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश के द्वारा उद्घाटन संबोधन में शुजालपुर के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिभागियों से आह्वान किया गया कि वे वह अपने क्षेत्र के दिव्यांगजनों को चिन्हित कर उन्हें शासकीय योजनाओं के बारे में अवगत कराएँ एवं लघु कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर आत्मनिर्भर बनाने तथा समाज की मुख्य धारा में जोड़ने पर विशेष बल दिया । साथ ही साथ बहुमुखी पाठ्यक्रमों के माध्यम से उन्हें प्रशिक्षित कर उनमें विभिन्न प्रकार के कौशलों का विकास किया जाए और इस प्रकार के कार्यक्रम से क्षेत्र के समस्त दिव्यांगजनों को रोजगार कौशल से भी जोड़ा जाए। मंत्री जी द्वारा कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए आश्वासन दिया गया कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रमों में शासन का पूरा सहयोग मिलता रहेगा एवं समय-समय पर ऐसे विभिन्न प्रकार की प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता भी है। कार्यक्रम का समापन उद्बोधन डॉ. आर. शर्मा जी के द्वारा किया गया।

दो दिवसीय समीक्षात्मक बैठक
दिनांक - 15-16 जनवरी 2026

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा उपलब्धि एवं योजना दो दिवसीय समीक्षात्मक बैठक होटल पलाश में 15 जनवरी और 16 जनवरी को आयोजित की गई थी। मध्य प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग के द्वारा मध्य प्रदेश के समस्त विश्वविद्यालय को एक-एक विषय दिया गया था।

भोज मुक्त विश्वविद्यालय को राजनीति विज्ञान विषय दिया गया था पिछले 1 वर्ष में विश्वविद्यालय द्वारा किया गया कार्य उच्च शिक्षा विभाग के समक्ष प्रस्तुत किया गया जिसमे भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु व डॉक्टर रतन सुर्यवंशी सहायक डॉक्टर जगदीश उपस्थित थे।

वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय में माँ सरस्वती की पूजा अर्चना दिनांक 23/01/2026

दिनांक 23/01/26 को वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर विश्वविद्यालय में मां सरस्वती जी की पूजा अर्चना विधिवत रूप से की गई जिसमें विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी गण ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। सभी ने आरती के पश्चात प्रसाद ग्रहण किया एवं विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती से शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय को नई पहचान एवं ऊंचाई तक पहुँचने की कामना की।

गणतंत्र दिवस
दिनांक 26/01/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल में 77 वें गणतंत्र दिवस का गरिमामय आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु डॉ. मिलिंद दांडेकर द्वारा ध्वज फहराकर समस्त विश्वविद्यालय परिवार को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दी गईं।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः विश्वविद्यालय परिसर स्थित राजा भोज की प्रतिमा पर माननीय कुलगुरु एवं कुलसचिव द्वारा पुष्प अर्पित कर की गई। इसके पश्चात विश्वविद्यालय परिसर में विधिवत ध्वज फहराया गया ।

ध्वज फहराने के बाद कार्यक्रम के उपरांत एम पी ऑनलाइन द्वारा विश्वविद्यालय को दो इलेक्ट्रॉनिक वाहन प्रदान किए गए। इन इलेक्ट्रॉनिक वाहनों का माननीय कुलगुरु डॉ. मिलिंद दांडेकर द्वारा पूजन कर लोकार्पण किया गया। एमपी ऑनलाइन द्वारा प्रदत्त ये इलेक्ट्रॉनिक वाहन विश्वविद्यालय परिसर में आने वाले दिव्यांग छात्र-छात्राओं की सुविधा एवं सहायता के उद्देश्य से प्रदान किए गए हैं। गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर इन इलेक्ट्रॉनिक वाहनों की चाबियाँ एमपी ऑनलाइन प्रतिनिधियों द्वारा विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु को सौंपी गईं।

इस अवसर पर मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के अधिकारी गण, प्रोफेसर, कर्मचारी तथा छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम राष्ट्रभक्ति एवं उत्साह के वातावरण में संपन्न हुआ।

स्व-अधिगम पाठय सामग्री निर्माण पर दो दिवसीय कार्यशाला
दिनांक 27-28/01/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल में स्व-अधिगम पाठय सामग्री (एसएलएम) निर्माण विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्य शाला के पहले दिन कार्यशाला की शुरुआत "या देवी सर्वभूतेषु शक्ति रूपेण संस्थिता" श्लोक के साथ की गई। इसके पश्चात विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद दांडेकर एवं मुख्य अतिथि प्रो. रविंद्र कान्हेरे द्वारा सरस्वती पूजन एवं दीप प्रज्जवलन कर कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर माननीय कुलगुरु द्वारा मुख्य अतिथि प्रो. रविंद्र कान्हेरे को शॉल, श्रीफल एवं रामचरितमानस भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यशाला की अध्यक्षता मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलगुरु प्रोफेसर (डॉ) मिलिंद दांडेकर ने की। कार्यशाला के संयोजक डॉ. हर्षवर्धन तोमर रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर रतन सूर्यवंशी द्वारा किया गया।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. रविंद्र कान्हेरे ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों को एसएलएम निर्माण के महत्वपूर्ण पहलुओं से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि एसएलएम का कंटेंट ऐसा होना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में विषय को जानने की जिज्ञासा एवं रुचि उत्पन्न हो। एसएलएम की भाषा सरल से जटिल की ओर होनी चाहिए, ताकि विद्यार्थी सहजता से अध्ययन कर सकें।

प्रो. कान्हेरे ने कहा कि एसएलएम कंटेंट को इलेक्ट्रॉनिक एवं डिजिटल स्वरूप में तैयार किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को ऐप एवं अन्य डिजिटल माध्यमों के द्वारा निःशुल्क कंटेंट उपलब्ध कराया जा सके। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक ओपन रिसोर्स के माध्यम से एसएलएम निर्माण पर विशेष बल दिया। उन्होंने यह भी कहा कि एसएलएम के अंतर्गत ऐसे बुकलेट तैयार किए जाएं, जिन्हें विद्यार्थी आसानी से पढ़ सकें। प्रत्येक यूनिट के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थियों को असाइनमेंट दिया जाना आवश्यक है।

एसएलएम लेखन में हिंदी भाषा सरल होनी चाहिए, अत्यधिक जटिल नहीं, साथ ही आवश्यकता अनुसार अंग्रेज़ी भाषा का भी समावेश किया जाना चाहिए। कंटेंट रोचक, उपयोगी एवं विद्यार्थी-केंद्रित होना चाहिए।

कार्यशाला में संयोजक डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर ने एसएलएम निर्माण की समीक्षा करते हुए कंटेंट राइटिंग, काउंसलिंग तथा असाइनमेंट में कंटेंट को विभाजित करने की प्रक्रिया के संबंध में विश्वविद्यालय के शिक्षकों को विस्तृत जानकारी दी।

इस दो दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री (एसएलएम) निर्माण कार्यशाला संपन्न

भोपाल, 28 जनवरी. मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल में स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री (एसएलएम) निर्माण विषय पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला का आज सफलतापूर्वक समापन हुआ. कार्यशाला के अंतिम दिन विश्वविद्यालय के माननीय कुलगुरु प्रोफेसर मिलिंद दांडेकर ने शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों के लिए तैयार की जाने वाली एसएलएम सामग्री में विषय की अधिकतम एवं गुणवत्तापूर्ण जानकारी होनी चाहिए, जिससे वह विद्यार्थियों के शिक्षण-अधिगम में सहायक सिद्ध हो सके. माननीय कुलगुरु ने कार्यशाला में यह भी जानकारी दी कि मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल अन्य विश्वविद्यालयों की भांति दो अन्य भाषाओं में प्रमाण पत्र (सर्टिफिकेट) पाठ्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है. इसके साथ ही उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय की सभी डिग्रियों में शीघ्र ही डिजिटल सिग्नेचर की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी तथा आने वाले समय में विश्वविद्यालय में शिक्षकों के रिक्त पदों को भी भरा जाएगा. स्व-अध्ययन पाठ्य सामग्री (एसएलएम) निर्माण विषय पर आयोजित इस दो दिवसीय कार्यशाला के दूसरे दिन एसएलएम एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आधारित अध्ययन सामग्री निर्माण पर विस्तृत चर्चा की गई.

भोज मुक्त विश्वविद्यालय में स्व-अधिगम पाठ्य सामग्री निर्माण पर कार्यशाला का आयोजन

छात्रों में जानने की रुचि पैदा करने वाली पाठ्य सामग्री बने

भोज मुक्त विश्वविद्यालय में एसएलएम निर्माण पर दो दिवसीय कार्यशाला

परीक्षा पे चर्चा
दिनांक 06/02/2026

कार्यालय, आयुक्त उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश शासन से प्राप्त निर्देश के क्रम में दिनांक 06.02.2026 को कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया गया। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलगुरु, कुलसचिव, शिक्षकगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जनजातीय विकास के लिए पाठ्यक्रम निर्माण पर कार्यशाला
दिनांक 11/02/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल एवं अनुसूचित जनजातीय शोध एवं ज्ञान केंद्र नई दिल्ली के मध्य हुए एमओयू के अनुक्रम में अनुसूचित जनजातीय बाहुल्य जिले झाबुआ में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है, जिसमें अनुसूचित जनजातीय विकास के लिए पाठ्यक्रमों के निर्माण पर विमर्श किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि जनजातीय समाज के समग्र विकास में सहयोगी बन सके। यह भी तय किया गया कि पाठ्यक्रम जनजातीय समाज की अस्मिता, अस्तित्व एवं विकास पर केंद्रित हों।

इस अवसर पर प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति के अध्यक्ष प्रो. रविंद्र कान्हेरे ने कहा कि जनजातीय विकास और अध्ययन पर आधारित ऐसे पाठ्यक्रमों का विकास किया जाए जो उनकी संस्कृति भाषा न्याय पद्धति और जीवन पद्धतियों का अध्ययन कर सकें। साथ ही पाठ्यक्रम ऐसे बनें जो उनकी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करें।

श्री हर्ष चौहान, राष्ट्रीय जनजातिय आयोग के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि जनजातीय समाज तक शिक्षा पहुंचाने के लिए मुक्त विश्वविद्यालयों की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्वविद्यालय जनजातीय विकास पर आधारित ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण करें, जिससे जनजातीय समाज संस्कृति और साहित्य पर व्यापक अध्ययन किया जा सके। पाठ्यक्रमों को जनजातीय समाज के व्यवसायों से भी समृद्ध किया जाना चाहिए।

विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद दांडेकर ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालयीन शिक्षा का उद्देश्य उन लोगों तक शिक्षा को पहुंचाना है, जहां तक शिक्षा की पहुंच नहीं है। मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण कर रहा है, जो जनजातीय समाज के विकास में सहायक बनेंगे।

प्रो. विवेक कुमार, आईआईटी नई दिल्ली ने कहा कि जनजातीय अस्मिता अस्तित्व और विकास को समझना आवश्यक है। जनजातिय शिक्षा ऐसी होना चाहिए जो जनजातीय समाज के लिए उपयोगी हो। जनजातीय समाज का परंपरागत ज्ञान कला और चिकित्सा इतनी प्रभावी है कि उस पर अध्ययन कर संपूर्ण समाज के लिए उपयोगी बनाया जा सकता है।

प्रो. मधुकर पाड़वी, कुलगुरु बिरसा मुंडा जनजातीय विश्वविद्यालय राजपिपला गुजरात एवं कार्यकारी अध्यक्ष भारतीय सामाजिक विज्ञान एवं शोध परिषद ने कहा कि रिसर्च मेथाडोलॉजी में शिक्षा की विदेशी संकल्पना की बजाय भारतीय संकल्पना को अपनाना होगा। जनजातीय परंपराओं और कलाओं को भी प्रकाशित करना आवश्यक है, जिससे जनजातीय समाज का समग्र विकास संभव हो सके। प्रोफेसर व्ही. के. सारस्वत, कुलपति पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर ने कहा कि जनजातीय अध्ययन पर वैल्यू एडेड पाठ्यक्रमों को लागू कर जन सामान्य में जनजाति अध्ययन को सामने लाया जा सकता है।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों ने किया मंथन

जनजातीय विकास पर पाठ्यक्रम बनाएगा भोज विवि

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

जनजातीय विकास पर मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम तैयार करने जा रहा है। इसको लेकर जनजातीय बहुल जिले झाबुआ में दो दिवसीय कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों ने मंथन किया। यह कार्यशाला जनजातीय शोध एवं ज्ञान केंद्र नई दिल्ली के सहयोग से यह आयोजित की गई थी।

इस दौरान प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति के अध्यक्ष प्रो. रविंद्र कान्हेरे, राष्ट्रीय जनजातिय आयोग के पूर्व अध्यक्ष हर्ष चौहान सहित मौजूद वक्ताओं ने कहा कि पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि जनजातीय समाज के समग्र विकास में सहयोगी बन सके। यह भी तय किया गया कि पाठ्यक्रम जनजातीय समाज की अस्मिता, अस्तित्व एवं विकास पर केंद्रित हों। साथ ही पाठ्यक्रम ऐसे बनें जो उनकी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करें।

व्यवसायिक पाठ्यक्रम जरूरी

पाठ्यक्रमों को जनजातीय समाज के व्यवसायों से भी समृद्ध करने की जरूरत यहां बताई गई है। इस अवसर पर भोज विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद दांडेकर, बिरसा मुंडा जनजातीय विश्वविद्यालय राजपिपला गुजरात के कुलगुरु प्रो. मधुकर पाडवी और पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर के कुलगुरु प्रोफेसर व्रीके सारस्वत सहित बड़ी संख्या में विषय विशेषज्ञ मौजूद थे।

कार्यशाला में भारत में जनजातीय समाज के विकास संबंधी पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया तथा यह विचार किया गया कि इस पाठ्यक्रम को अन्य परंपरागत पाठ्यक्रमों के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार वैल्यू एडेड पाठ्यक्रम के रूप में चलाया जा सकता है, साथ ही इन पाठ्यक्रमों को स्वयं पोर्टल के माध्यम से भी संचालित किया जाना चाहिए, ताकि इसकी पहुंच सभी तक हो सके। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रमों के निर्माण के संबंध में वैभव सुरंगे, अभिनव प्रकाश, दीपमाला रावत, नेहा गुप्ता, पियासी दत्ता, विमल भाई गुजरात, राजीव शर्मा, लक्ष्मण सिंह मरकाम धर्मराज कटियारे, डॉ. गजेंद्र आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन प्रो. रतन सूर्यवंशी, निदेशक एवं संयोजक मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा किया गया।

पाठ्यक्रम ऐसा हो, जो स्थानीय जरूरतों को पूरा करे : प्रो. कान्हेरे

भोपाल, 11 फरवरी. मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल और अनुसूचित जनजातीय शोध एवं ज्ञान केंद्र नई दिल्ली के मध्य हुए एमओयू के अनुक्रम में अनुसूचित जनजातीय बाहुल्य जिले झाबुआ में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है.

इसमें वक्ताओं ने कहा कि पाठ्यक्रम का निर्माण इस प्रकार किया जाना चाहिए कि जनजातीय समाज के समग्र विकास में सहयोगी बन सके. यह भी तय किया गया कि पाठ्यक्रम जनजातीय समाज की अस्मिता, अस्तित्व एवं विकास पर केंद्रित हों.

इस अवसर पर प्रवेश एवं शुल्क विनियामक समिति के अध्यक्ष प्रो. रविंद्र कान्हेरे ने कहा कि जनजातीय विकास और अध्ययन पर आधारित ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण किया जाए जो उनकी संस्कृति भाषा न्याय पद्धति और जीवन पद्धतियों का अध्ययन कर सकें, साथ ही पाठ्यक्रम ऐसे चरें जो उनकी स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करें. हर्ष चौहान, राष्ट्रीय जनजातीय आयोग के पूर्व अध्यक्ष ने कहा कि विश्वविद्यालय जनजातीय विकास पर आधारित ऐसे पाठ्यक्रमों का निर्माण करें, जिससे जनजातीय समाज संस्कृति और साहित्य पर व्यापक अध्ययन किया जा सके.

विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद दांडेकर ने कहा कि मुक्त विश्वविद्यालयीन शिक्षा का उद्देश्य उन लोगों तक शिक्षा को पहुंचाना है, जहां तक शिक्षा की पहुंच नहीं है. प्रो. विवेक कुमार, आईग्नोयू नई दिल्ली ने जनजातीय शिक्षा ऐसी होना चाहिए जो जनजातीय समाज के लिए उपयोगी हो.

भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक -2025 विषय पर आयोजित एक दिवसीय आनंदशाला दिनांक 19/02/2026

भारत में हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन हो रहे हैं। 2047 तक भारत को विकसित अर्थव्यवस्था बनाना है। इसके लिए हर क्षेत्र में परिवर्तन की आवश्यकता है। भारतीयता के भाव का उदघोष होता रहे इसके लिए तंत्र और पद्धति विकसित करने की आवश्यकता है। यह बात श्री इंदर सिंह परमार, मंत्री, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग ने कही। वे विकसित भारत शिक्षा अधिष्ठान विधेयक -2025 (VBSA) विषय पर आयोजित आनन्दशाला को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। इस एक दिवसीय आनंदशाला का आयोजन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय और भारतीय शिक्षण मंडल द्वारा शुक्रवार को विश्वविद्यालय के सभागार में किया गया।

मंत्री श्री परमार ने आगे कहा कि इस आनन्दशाला में कुलगुरुओं और शिक्षाविदों के विमर्श से ज्यादा तथ्यात्मक सुझाव निकलेंगे। उन्होंने कहा कि 2047 में विकसित भारत बनाने के लक्ष्य को देखते हुए परिवर्तन हो रहे हैं। यह बदलाव केवल शिक्षा क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सभी क्षेत्रों में हो रहे हैं। जहां- जहां भी गुलामी के चिन्ह हैं, उन्हें विदा करने के प्रयास किए जा रहे हैं। भारत के तंत्र को समझने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय दर्शन को ठीक से समझना और इसी के अनुसार आगे बढ़ना होगा।

आनंदशाला के प्रारंभ में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. (डॉ.) मिलिंद दांडेकर ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कहा कि पिछले 70 वर्षों में यूजीसी ने अपनी यात्रा की है। भारत सरकार ने यूजीसी, एआईसीटीई आदि संस्थाओं को एकीकृत करने का लक्ष्य इस विधेयक में रखा है। आनंदशाला में शिक्षाविदों के चिंतन मनन का सार जेपीसी को भेजा जाएगा।

बीज वक्ता एवं भारतीय शिक्षण मंडल के उच्च शिक्षा गतिविधि अखिल भारतीय सह प्रमुख श्री विश्वजीत पेंडसे ने पीपीटी के माध्यम से विधेयक को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि विकसित समाज से ही विकसित भारत का निर्माण होगा। इसीलिए विकसित समाज हमारा लक्ष्य है। देश के लिए पीढ़ी का निर्माण करना होगा जिससे वे देश को विकसित बना सकें। इस दृष्टि से हम इस विधेयक पर विचार विमर्श कर अपने सुझाव देंगे।

विशिष्ट अतिथि भारतीय शिक्षण मंडल के मध्य क्षेत्र संयोजक प्रो. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी ने कहा कि समाज की विकृतियों को दूर करना है तो भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे लाना होगा। इस बिल के माध्यम से स्वायत्तता बढ़ेगी। भारतीय शिक्षण मंडल एक विचार प्रवाह है। हम शिक्षा में जो भी परिवर्तन चाहते हैं, इसके सुझाव सरकार को देने वाले हैं।
कार्यक्रम के अंत में मध्य भारत प्रान्त, भारतीय शिक्षण मंडल के प्रांत अध्यक्ष प्रो हरिहर बसंत गुप्ता ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर डॉ अनिल पाठक ओएसडी, उच्च शिक्षा एवं डॉ सुशील मंडेरिया भी उपस्थित रहे ।
कार्यक्रम में विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलगुरु, प्राध्यापक एवं भारतीय शिक्षण के मध्य भारत प्रांत एवं महानगर इकाई के कार्यकर्ता भी उपस्थित रहे।

कुलगुरुओं और शिक्षाविदों ने जेपीसी को दिए सुझाव

द्वितीय सत्र दो अलग अलग भागों में हुआ। एक भाग में प्रांत के कुलगुरुओं ने एवं दूसरे भाग में शिक्षाविदों ने विचार विमर्श कर सुझाव दिए। ये सुझाव इस विधेयक हेतु गठित संयुक्त संसदीय समिति को भेजे जाएंगे।

आनंदशाला के अंतिम सत्र में प्रतिभागी शिक्षाविदों के बीच खुली चर्चा हुई। मंच पर मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. (डॉ.) मिलिंद दांडेकर, भारतीय शिक्षण मंडल के उच्च शिक्षा गतिविधि सह प्रमुख श्री विश्वजीत पेंडसे, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान के निदेशक डॉ. प्रज्ञेष अग्रवाल एवं एमिटी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ आर एस तोमर उपस्थित थे। विषय प्रबोधन डॉ प्रज्ञेष अग्रवाल ने किया। खुली चर्चा में शिक्षाविदों ने अपनी जिज्ञासा एवं सुझाव रखे।

समापन सत्र में हुई खुली चर्चा

आनंदशाला के अंतिम सत्र में प्रतिभागी शिक्षाविदों के बीच खुली चर्चा हुई। मंच पर मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. डॉ मिलिंद दांडेकर, भारतीय शिक्षण मंडल के उच्च शिक्षा गतिविधि सह प्रमुख श्री विश्वजीत पेंडसे, उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान के निदेशक डॉ प्रज्ञेष अग्रवाल एवं एमिटी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ आर. एस. तोमर उपस्थित थे। विषय प्रबोधन डॉ प्रज्ञेष अग्रवाल ने किया। खुली चर्चा में शिक्षाविदों ने अपनी जिज्ञासा एवं सुझाव रखे।

विज्ञान दिवस
दिनांक 27/02/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय में विज्ञान दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका शीर्षक "विज्ञान में हिंदी की उपयोगिता और महत्व-भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में" था ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि प्रो. चेतन सिंह सोलंकी थे, जो कि एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के अध्यक्ष है। इन्हें भारत में "सौर पुरुष" के नाम से भी जाना जाता है । प्रो. सोलंकी आईआईटी मुंबई के पूर्व प्रोफेसर हैं और वह 11 वर्षों की एनर्जी स्वराज यात्रा पर है। उन्होंने विज्ञान दिवस के अवसर पर जलवायु परिवर्तन के संबंध में चर्चा की।

प्रो. सोलंकी ने कहा कि यह जलवायु परिवर्तन पिछले 10 वर्षों में बहुत तेजी से हो रहा है। जलवायु परिवर्तन एक गंभीर समस्या है। इस जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण ग्लोबल वार्मिंग है । 2024 सबसे गर्म साल था। प्रो. सोलंकी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन एक सीमा के बाद बढ़ते बढ़ते ऐसे हो जाएगा कि मनुष्य का जीना मुश्किल हो जाएगा ।

आज लगभग 25% आबादी पानी की कमी से जूझ रही है और अगले 25 वर्षों में धरती का तापमान लगभग 2 डिग्री बढ़ने की संभावना है। यह जलवायु परिवर्तन इतना गंभीर विषय है परंतु लोगों को इसकी चिंता नहीं है। हमारे अति उपभोग के कारण भी ग्लोबल वार्मिंग हो रही है क्योंकि किसी भी सामग्री के निर्माण में प्रदूषण होता है और हम अधिकतर कार्बन ऊर्जा का उपयोग करते हैं, इससे वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड जाती है। यह जलवायु परिवर्तन का एक प्रमुख कारण है । उन्होंने कहा कि यदि मनुष्य की उपभोग की मांग बढ़ती है तो जलवायु परिवर्तन और तेजी से होगा । हमें अपने उपभोग को कम करना होगा । डॉक्टर सोलंकी ने कहा कि ऊर्जा और पानी के कारण भविष्य में विश्व में अस्थिरता बढ़ेगी।

उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन लोगों के द्वारा खड़ी की गई समस्या है और लोगों के द्वारा ही यह हल हो सकती है । इसके लिए हर एक व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है कि वह अपने उपभोग को कम करेऔर दूसरों को भी उपभोग कम करने के लिए प्रेरित करे। इस अवसर पर प्रो. सोलंकी ने उपस्थित छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों को उपभोग काम करने संबंधी शपथ दिलाई और इस संबंध में एक वर्ष तक नया कपड़ा न खरीदने की सम्बन्धी अपने जन अभियान से लोगों को जोड़ा। कार्यक्रम में बीज वक्ता के रूप में उद्बोधन देते हुए मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के निर्देशक प्रो. (डॉ) रतन सूर्यवंशी ने कहा कि आज का युग विज्ञान का युग है।

उन्होंने कहा कि हमारे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई ने जय जवान, जय किसान के नारे को आगे बढ़ाते हुए जय विज्ञान भी जोड़ा था ।इससे विज्ञान की महत्ता स्थापित होती है । डॉ. सूर्यवंशी ने इस अवसर पर भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व पर भी प्रकाश डाला उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा हमेशा से ही विज्ञान सम्मत रही है । कोविड काल के दौरान हमने जो वैक्सीन तैयार की उसको भारत तक सीमित न रखकर विश्व के अन्य देशों में भी उसे बांटा और मानवता की सेवा की । डॉ. सूर्यवंशी ने इस बात पर विशेष उल्लेख किया कि हमें आधुनिकता के साथ-साथ अपनी परंपराओं और धरोहरों को भी सुरक्षित रखना है । कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. मिलिंद दांडेकर ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा में विज्ञान और अन्य विषय अलग-अलग नहीं हैं, इसलिए भारतीय परंपरा में सभी विषय पढ़ाए जाते हैं।

उन्होंने इस संदर्भ में सुश्रुत, लीलावती, नागार्जुन और अन्य वैज्ञानिकों को याद करते हुए कहा कि यह सब समग्र विकास पर जोर देते थे । समग्रता का विचार आज की आवश्यकता है और समग्र रूप से पढ़ने के लिए मातृभाषा सर्वोत्तम होती है । विज्ञान पढ़ने के लिए अपनी मातृभाषा से अच्छी कोई दूसरी भाषा नहीं हो सकती । आज हमें अपनी भाषा में मौलिक चिंतन करने और शोधकर लेखन करने की आवश्यकता है। विज्ञान का मूल उद्देश्य समाज का और मनुष्य मात्र का कल्याण करना है । विकसित भारत 2047 तक बनाने के लिए हमें बहुत अधिक वैज्ञानिक प्रगति की आवश्यकता होगी उन्होंने कहा कि हमसे छोटे-छोटे देश भी पेटेंट के मामले में हमारे देश से आगे हैं । प्रोफेसर दांडेकर ने इस बात पर बल दिया कि भारतीय शोध प्रविधि कैसी रही है इस पर हमें पुनः विचार करने की आवश्यकता है ।

विकसित भारत बनाने के लिए हमें पूरी तन्मयता के साथ कार्य करना पड़ेगा । इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा के विद्यार्थियों के मध्य काव्य पाठ और वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया भी गया । कार्यक्रम का आयोजन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन सेंटर द्वारा किया गया ।

दिव्यांगजन परीक्षण एवं परामर्श शिविर, शुजालपुर
दिनांक 28/02/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय और समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र (सी.आर.सी.), भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण और उनके पुनर्वास के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण और परामर्श शिविर का आयोजन जे.एन.एस. शासकीय महाविद्यालय शुजालपुर में किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बोलते हुए उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा तथा आयुष विभाग मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने कहा कि दिव्यांगजनों को कोई न कोई रोजगार प्रदान करवाना सरकार का उद्देश्य है और मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय को रोजगार परक शिक्षा देने के लिए निर्देशित भी किया गया है। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को अपनी इच्छा शक्ति प्रबल रखनी चाहिए।

हम उन्हें ऐसे छोटे-छोटे कार्यों हेतु प्रशिक्षित करना चाहते हैं जिससे वह कुछ रोजगार पा सके और उनके मन में यह भावना आए कि मैं परिवार पर बोझ नहीं हूं बल्कि उनके मन में यह विश्वास हो कि मैं भी कुछ कर सकता हूं, अपने परिवार को संबल दे सकता हूं। श्री परमार ने कहा कि इस प्रकार का एक छोटा सा प्रयास सरकार के द्वारा आज शुजालपुर में कर रहे हैं। यह प्रयास एक सेवा है, हमारी जिम्मेदारी है। इस शिविर के माध्यम से दिव्यांगजनों का परीक्षण कर प्रमाण पत्र देना, उनको सहायता उपकरण उपलब्ध करवाने का कार्य भारत सरकार के साथ साथ हमारी मध्य प्रदेश सरकार भी करती है। उन्होंने कहा कि जो दिव्यांगजन शुजालपुर के कोने-कोने से यहां आए हैं, हमारे जनपद पंचायत की टीम उनका सर्वे करेगी, उनकी अनुशंसा पर सरकार से एवं जन सहयोग से भी रोजगार से जोड़ने का प्रयास करेंगे। दिव्यांगजनों को मन से यह भाव निकालने की जरूरत है कि हम कमजोर हैं। हमें जरूरत है जज्बे के साथ आगे बढ़ने की, सरकार आपकी सहायता के लिए तत्पर है। किसी भी काम को छोटा ना समझें जो रोजगार का साधन है, वह सर्वश्रेष्ठ कार्य है। श्री इंदर सिंह परमार ने इस अवसर पर महाविद्यालय में आयोजित शिविर का निरीक्षण कर दिव्यांनगजनों एवं विशेषज्ञों से चर्चा की तथा दिव्यांगजनों से मिलकर उनकी समस्याएं सुनी और उन समस्याओं के निराकरण हेतु संबंधित सरकारी विभागों के अधिकारियों को समुचित निर्देश दिए।

कार्यक्रम में इसके पूर्व मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. हेमंत सिंह केशवाल ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि इस शिविर के पूर्व में भी हमने दिनांक 16 जनवरी को आंगनवाड़ी, आशा स्वापस्स्सु कार्यकर्ता, शिक्षकों, विशेष शिक्षकों तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया था। आज के शिविर में सहायक उपकरणों के लिए रजिस्ट्रेशन होगा तथा जिनका विशिष्ट दिव्यांगता पहचान पत्र (UDID) नहीं बना है, उनका परीक्षण कर कार्ड बनाने हेतु रजिस्ट्रेशन किया जाएगा। शिविर में चिन्हांकित किये गये दिव्यांगजनों को अगले शिविर में सहायक उपकरण प्रदान किये जाने का प्रयास किया जायेगा। इस शिविर को सफल बनाने हेतु में शाजापुर शासन-प्रशासन द्वारा डॉ. संजय खंडेलवाल, डॉ. किरण आठिया, डॉ. तेजपाल सिंह जादौन, डॉ. रविद्र गुप्ता, डॉ. क्षितिज के. मुरारी, श्री मनीष माहेश्वरी, श्री शिवचरण कुशवाह, श्री गोविन्दा रेकवार जिला मेडिकल बोर्ड की टीम एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी शुजालपुर श्री डी. आर. एस. राणा का जनपद टीम के साथ सक्रिय सहयोग रहा।

इस शिविर में दिव्यांगजनों के लिए कौशल विकास पर विशेष सत्र आयोजित किया गया। इसी प्रकार दिव्यांगजनों को सरकार द्वारा दी जाने वाली विभिन्न प्रकार की सुविधाओं के संबंध में भी एक सत्र रहा, एक अन्य सत्र में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम 2016 पर विस्तार से समझाया गया। शिविर में 36 दृष्टिबाधित, 64 श्रवण बाधित, 68 शारीरिक दिव्यांगता, 25 बौद्धिक दिव्यांगता आदि इस प्रकार कुल लगभग 193 दिव्यांगजनों का UDID हेतु पंजीयन किया गया तथा लगभग 40 दिव्यांगजनों को उपकरण प्रदान हेतु चिन्हित किया गया। शिविर में शुजालपुर के अलग-अलग हिस्सों से आए दिव्यांगजन एवं उनके परिजन भारी संख्या में शामिल हुए। इस कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन शुजालपुर शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी और वकील हेमंत सक्सेना द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षक सुरेन्द्र कुमार गौतम द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र (सी.आर.सी.), भोपाल के निदेशक डॉ. नरेंद्र कुमार तथा शासकीय जवाहरलाल नेहरू स्मृति कॉलेज शुजालपुर के प्राचार्य डॉ. राजेश शर्मा एवं शहर के अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित रहे।

केंद्रीय बजट 2026 में माननीय प्रधानमंत्री जी के "सबका साथ, सबका विकास" विषय पर आयोजित वेबिनार दिनांक 09/03/2026

कार्यालय, आयुक्त उच्च शिक्षा, मध्यप्रदेश शासन से प्राप्त निर्देश के क्रम में दिनांक 09.03.2026 को कार्यक्रम का प्रसारण किया गया। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलगुरु, कुलसचिव, शिक्षकगण एवं अधिकारीगण उपस्थित रहे।

स्टार्टअप के लीगल और एथिकल स्टेप्स
दिनांक 16/03/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल के इनक्यूबेशन विभाग द्वारा विद्यार्थियों के लिए "स्टार्टअप के लीगल और एथिकल स्टेप्स" विषय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को स्टार्टअप शुरू करने से जुड़ी कानूनी और नैतिक प्रक्रियाओं की जानकारी देना था।

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस प्रो. बी. बी. शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि किसी भी स्टार्टअप को शुरू करने के लिए सही योजना, सरकारी योजनाओं की जानकारी और कानूनी प्रक्रियाओं को समझना बहुत जरूरी होता है। उन्होंने नए स्टार्टअप को स्थापित करने के लिए बनाई गई सरकारी नीतियों और उनसे मिलने वाले लाभों के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। प्रो. शर्मा ने विद्यार्थियों को समझाने के लिए अमेज़न, ब्लिंकिट जैसे सफल स्टार्टअप के उदाहरण दिए। उन्होंने बताया कि एक अच्छे विचार को सही दिशा में मेहनत करके कम जोखिम के साथ बड़े बिजनेस में बदला जा सकता है। स्टार्टअप में जोख़िम के बारे सभी विद्यार्थियों को बताते हुए उन्होंने कहा कि "बिजनेस और युद्ध में एक ही सिद्धांत लागू होते हैं", इसलिए व्यवसाय में भी सही योजना,धैर्य और सही समय पर निर्णय लेना बहुत महत्वपूर्ण होता है। अपने संबोधन में प्रो. शर्मा ने लेबर लॉ, कॉपीराइट जैसे कानूनी विषयों पर भी विद्यार्थियों को जानकारी दी।

उन्होंने कानून और नैतिकता के बीच का अंतर सरल भाषा में समझाते हुए कहा कि किसी भी व्यवसाय की सफलता के लिए दोनों का पालन करना आवश्यक है और साथ ही बिजनेस में पारदर्शिता का भी ध्यान रखना चाहिए।

प्रो. शर्मा ने भोपाल के स्टार्टअप सागर गैरे का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे एक छोटे स्टार्टअप को मेहनत और सही योजना के माध्यम से बड़े बिजनेस में बदला जा सकता है। साथ ही उन्होंने गुजरात के लोगों का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां के युवा कम उम्र से ही नौकरी के बजाय व्यवसाय और स्टार्टअप की ओर अधिक रुचि दिखाते हैं।

उन्होंने शिक्षा क्षेत्र के बारे में भी बताते हुए कहा कि एजुकेशन सेक्टर में स्टार्टअप की संभावनाएं हमेशा अच्छी रही हैं। जिन विद्यार्थियों की विज्ञान और अंग्रेजी विषयों पर अच्छी पकड़ होती है, वे शिक्षा के क्षेत्र में अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं। प्रो. शर्मा ने कहा कि चार दशक पहले भी जिन लोगों की इन विषयों में अच्छी पकड़ होती थी, वे ट्यूशन और कोचिंग के माध्यम से अपना शिक्षण कार्य शुरू कर देते थे। आज डिजिटल और ऑनलाइन माध्यम से जुड़ कर शिक्षा के क्षेत्र में स्टार्टअप शुरू करना और भी आसान हो गया है। इसके लिए सबसे जरूरी है कि व्यक्ति को अपने विषय में अच्छी पकड़ होना चाहिए।

कार्यक्रम में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय के सीका डिपार्टमेंट की सलाहकार भारती शर्मा तथा विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में इनक्यूबेशन डिपार्टमेंट की डायरेक्टर डॉ. शुचि मिश्रा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

मार्गदर्शन | भोज विवि में स्टार्टअप के लीगल और एथिकल स्टेप्स पर कार्यक्रम आयोजित

स्टार्टअप में भी जरूरी है युद्ध जैसी रणनीति

नवभारत प्रतिनिधि

भोपाल, 16 मार्च. बिजनेस और युद्ध में एक ही सिद्धांत लागू होते हैं. इसलिए व्यवसाय में सही योजना धैर्य और सही समय पर निर्णय लेना बहुत जरूरी होता है. यह बात प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस बीबी शर्मा ने सोमवार को मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय के इनक्यूबेशन डिपार्टमेंट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कही.

उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि किसी भी स्टार्टअप को शुरू करने के लिए सही सरकारी योजनाओं की जानकारी और कानूनी प्रक्रियाओं की समझ होना जरूरी है. उन्होंने सफल स्टार्टअप के उदाहरण देते हुए बताया कि एक अच्छे विचार को सही दिशा में मेहनत करके कम जोखिम के साथ बड़े व्यवसाय में बदला जा सकता है. उन्होंने अमेजन और ब्लिंकिट जैसे स्टार्टअप के उदाहरण भी दिए. बता दें कार्यक्रम का विषय स्टार्टअप के लीगल और एथिकल स्टेप्स था. उन्होंने विद्यार्थियों को लेकर लॉ और कॉपीराइट जैसे कानूनी पहलुओं की जानकारी देते हुए कानून और नैतिकता दोनों का पालन व्यवसाय की सफलता के लिए आवश्यक बताया. साथ ही व्यवसाय में पारदर्शिता बनाए रखने को भी उतना ही महत्वपूर्ण बताया. उन्होंने कहा कि गुजरात में युवा कम उम्र से ही नौकरी के बजाय व्यवसाय और स्टार्टअप की ओर अधिक रुझान दिखाते हैं. उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में स्टार्टअप की संभावनाओं पर भी चर्चा की. उन्होंने कहा कि जिन विद्यार्थियों की विज्ञान और अंग्रेजी विषयों पर अच्छी पकड़ होती है वे शिक्षा के क्षेत्र में आसानी से अपना स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं. पहले भी लोग ट्यूशन और कोचिंग के माध्यम से शिक्षण कार्य शुरू करते थे.

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस
दिनांक 17/03/2026

मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आज कैंसर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन और सरस्वती पूजन से हुई।

इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में अपोलो सेज हॉस्पिटल, भोपाल की वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं लेप्रोस्कोपी सर्जन डॉ. अनुपा वालिया लोकवानी शामिल हुईं। उनका स्वागत माननीय प्रभारी कुलगुरु डॉ. रतन सूर्यवंशी ने तुलसी पौधा भेंट कर किया।

डॉ. अनुपा ने महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर और ब्रेस्ट कैंसर के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर चिकित्सीय जांच और सही जानकारी से इन बीमारियों से बचा जा सकता है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को रोज़ 30 से 35 मिनट तक व्यायाम करना चाहिए और संतुलित आहार लेना चाहिए। इससे शरीर मजबूत रहता है और कई बीमारियों से बचाव होता है। डॉ अनुपा वालिया द्वारा बताया गया कि महिलाओं में होने वाले हार्मोनल बदलाव और मेनोपॉज के समय आने वाली समस्याओं को व्यायाम के जरिए ठीक किया जा सकता है।

डॉ. अनुपा ने सर्वाइकल कैंसर की जानकारी देते हुए बताया कि यह मुख्य रूप से ह्यूमन पेपिलोमावायरस (HPV) के लंबे समय तक संक्रमण के कारण होता है। यह भारत में महिलाओं में होने वाले सबसे आम कैंसर में से एक है, जिससे हर साल हजारों मौतें होती हैं। इस प्रकार के कैंसर से बचाव के लिए 9-14 वर्ष की लड़कियों के लिए HPV टीकाकरण (Vaccination) सबसे प्रभावी उपाय है। इसके अलावा, 25-50 वर्ष की महिलाओं को नियमित रूप से पैप स्मीयर या HPV जांच करानी चाहिए।

वहीं ब्रेस्ट कैंसर से बचने के लिये महिलाओं को हर महीने सेल्फ एग्जामिनेशन एक माह में एक बार की जाने वाली खुद की जांच अवश्य करना चाहिए। जिसके संबंध में वह अपने डॉक्टर से जरूरत पड़ने पर सलाह ले सकती है। जिन परिवारों में कैंसर का इतिहास है, उन्हें 1–2 साल में मैमोग्राफी जांच करानी चाहिए।

डॉ वालिया ने छात्राओं को कम उम्र से ही व्यायाम शुरू करने की तथा प्रोटीन युक्त भोजन करने की सलाह दी, ताकि हड्डियां मजबूत रहें और आगे भविष्य में कैल्शियम की कमी से होने वाली समस्याओं से बचा जा सके।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए माननीय प्रभारी कुलगुरु डॉ. रतन सूर्यवंशी ने मातृशक्ति का सम्मान करते हुए कहा कि डर बीमारी से बड़ा होता है, इसलिए हमें डर पर जीत हासिल करनी चाहिए। उन्होंने क्रिकेटर युवराज सिंह का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे उन्होंने कैंसर जैसी गंभीर बीमारी को हराया। कार्यक्रम के आयोजक कुलसचिव डॉ. सुशील मंडेरिया ने कहा कि आज की आधुनिक जीवनशैली बीमारियों का एक बड़ा कारण है। पहले लोग रोजमर्रा के काम जैसे चक्की पीसना, झूला झूलना और सिलबट्टे पर मसाला पीसना जैसे काम करते थे, जिससे उनका शरीर सक्रिय रहता था और वे स्वस्थ रहते थे। वर्तमान समय में भी इस प्रकार के शारीरिक श्रम से संबंधित कार्य शामिल होने चाहिए जिससे हम पूर्णतः स्वस्थ रह सकें।

इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त)विश्वविद्यालय भोपाल के सहायक कुल सचिव नितिन सांगले, डॉ प्रज्ञा शुक्ला-निदेशक आईटी, डॉ विभा मिश्रा-निदेशक सीका, डॉ. नरेंद्र त्रिपाठी-निदेशक अकादमी, प्रो. बी बी शर्मा, डॉ हेमंत केशवाल, डॉ शुचि मिश्रा, डॉ भारती शर्मा, डॉ सुनीता पमनानी और विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन वरिष्ठ सलाहकर श्रीमति निधि रावल गौतम द्वारा किया गया ।